गुरु नानक – सबद ५
गावै को ताण होवै किसै ताण ॥
जप, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, १

गावै को ताण होवै किसै ताण ॥
गावै को दात जाणै नीसाण ॥
गावै को गुण वडिआईआ चार ॥
गावै को विदिआ विखम वीचार ॥
गावै को साज करे तन खेह ॥
गावै को जीअ लै फिर देह ॥
गावै को जापै दिसै दूर ॥
गावै को वेखै हादरा हदूर ॥
कथना कथी न आवै तोट ॥
कथ कथ कथी कोटी कोटि कोटि ॥
देदा दे लैदे थक पाहि ॥
जुगा जुगंतर खाही खाहि ॥
हुकमी हुकम चलाए राह ॥
नानक विगसै वेपरवाह ॥३॥

सार: लोग अपनी मनःस्थिति के अनुसार सर्वव्यापी चेतना के विविध पहलुओं के बारे में अपनी समझ व्यक्त करते हैं, जो कि जागरूकता के स्तर से जुड़ी होती है। उनकी धारणाएँ जीवन के अलग अलग समय के दौरान उनके अनुभव पर आधारित होती हैं, जो प्रकृति के नियमों के तहत नियंत्रित होती हैं।

गावै को ताण होवै किसै ताण ॥
जिन लोगों को सर्वव्यापी चेतना की शक्ति पर विश्वास है, वो इसका सहारा लेते हैं।

गावै को दात जाणै नीसाण ॥
जो लोग सर्वव्यापी चेतना में विश्वास करते हैं वो सृष्टि की उदारता की तरफ़ अपना आभार व्यक्त करते हैं।

गावै को गुण वडिआईआ चार ॥

जिन लोगों ने सर्वव्यापी चेतना को अनुभव किया है वह इसके अलग अलग गुण व्यक्त करते हैं।

गावै को विदिआ विखम वीचार ॥

जिन लोगों ने आलोचनात्मक सोच के ज़रिए से सर्वव्यापी चेतना का ज्ञान प्राप्त किया है, वह इसकी सर्वव्यापकता का उल्लेख करते हैं।

गावै को साज करे तन खेह ॥

जो लोग शारीरिक अस्तित्व की नज़ाकत को पहचानते हैं वो सर्वव्यापी चेतना को इसके निर्माता और विनाशक के रूप में मानते हैं।

गावै को जीअ लै फिर देह ॥

जो लोग सर्वव्यापी चेतना की स्थिरता पर सोच विचार करते हैं, उनका कहना है यह शक्ति जीवन लेती है और देती भी है।

गावै को जापै दिसै दूर ॥

जिन लोगों ने अभी तक आत्म-चिंतन शुरू नहीं किया है, उनको सर्वव्यापी चेतना दूर दिखाई देती है।

गावै को वेखै हादरा हदूर ॥

जिनका प्रकृति से संबंध है, वो सर्वव्यापी चेतना की मौजूदगी को महसूस करते हैं।

कथना कथी न आवै तोट ॥

सर्वव्यापी चेतना के बारे में बखानों की कोई कमी नहीं है।

कथ कथ कथी कोटी कोटि कोटि ॥

असंख्य मान्यताएँ, दर्शन और उनके सूत्रधार हैं।

देदा दे लैदे थक पाहि ॥

देने वाला दाता देता रहता है, और लेने वाला लेते-लेते थक जाता है।

जुगा जुगंतर खाही खाहि ॥
आदि काल से साधक धारणाओं में लीन रहते हैं।

हुकमी हुकम चलाए राह ॥
सर्वव्यापी चेतना ज़िंदगी जीने के तरीक़े का अभ्यास करने के मार्ग की ओर ले जाती है।

नानक विगसै वेपरवाह ॥३॥
नानक कहते हैं कि वो निश्चिंत होने की आध्यात्मिक अवस्था में आनंद से खिल जाते हैं। (३)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि विचारों, अनुभवों और हालात पर निर्भर करने की सीमा से परे जब कोई सर्वव्यापी चेतना के अनुसार बिना किसी आशंका के दुनयावी रास्ते पर चलता है, तो जीवन का सफ़र आनंद से भर जाता ।

पहलकदमी
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com